संवाहिका

चौमासा ई–पत्रिका
वर्ष– 02, अंक–06, मार्च–जून ; 2024

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोण्डा (अवध)

सी.पी.आर. सीखती हुई छात्राएं

डॉ. ए.पी. सिंह, प्रशिक्षण प्रदान करते हुए

डा. अंजू अग्रवाल, ब्रेस्ट कैंसर पर वार्ता करते हुए

टीम गोण्डा रेड क्रास लोगो वाली टी-शर्ट में

ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता पर वार्ता में प्रतिभागी छात्राएं

संवाहिका

चौमासा ई-पत्रिका

वर्ष-02 अंक-06 मार्च-जून ; 2024

लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में
कि बिजली के दाहघर में हो मेरा संस्कार
ताकि मेरे बाद
एक बेटे और एक बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।

– साभार : कवि नरेश सक्सेना

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज
गोण्डा (अवध)

संवाहिका मंडल

संरक्षक

प्रो० रवीन्द्र कुमार
प्राचार्य

संपादक

प्रो० जय शंकर तिवारी
हिंदी विभाग

सह संपादक

अच्युत शुक्ल
असि० प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग

संपादक मंडल

डॉ० नीरज यादव
असि० प्रोफ़ेसर, बी.एड. विभाग

डॉ. पुष्यमित्र मिश्र
असि० प्रोफ़ेसर, रसायन विज्ञान विभाग

डॉ. परवेज आलम
असि० प्रोफ़ेसर, भूगोल विभाग

डॉ. वंदना भारतीय
असि० प्रोफ़ेसर, अंग्रेजी विभाग

डॉ. अजीत कुमार मिश्र
असि० प्रोफ़ेसर, भूगोल विभाग

डॉ. शैलजा सिंह
असि० प्रोफ़ेसर, बी.बी.ए. विभाग

डॉ. हरीश कुमार शुक्ल
असि० प्रोफ़ेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग

प्रकाशक

प्राचार्य, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा (अवध)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता से सम्बन्धित सम्पूर्ण दायित्व
तत्सम्बन्धित रचनाकारों का है, सम्पादक मण्डल का नहीं

प्राचार्य की लेखनी से

भारत में पर्यावरण–चेतना का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। वेदों में प्राकृतिक शक्तियों की अभ्यर्थना और अन्य धार्मिक ग्रंथो में प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान और उसकी रक्षा करने का उपदेश प्राप्त होता है, लेकिन आधुनिक जीवन शैली, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरण प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गई है।

हालांकि पिछले कुछ दशकों में भारत में पर्यावरण–चेतना में काफी वृद्धि हुई है। लोग पर्यावरण के मुद्दों के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं। युवा पीढ़ी तो इस मुद्दे पर और भी अधिक सक्रिय है। कई गैर सरकारी संगठन और सामाजिक कार्यकर्ता पर्यावरण–संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं, लेकिन यह काफी नहीं है। हमें मिलजुल कर अपनी प्राचीन परंपरा के अनुरूप प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण के लिए तेजी से काम करना होगा।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद स्कूलों, कॉलेजों और अन्य शिक्षण संस्थानों में पर्यावरण शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई कानून बनाए हैं, जिनका उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान है। मीडिया निरंतर पर्यावरण मुद्दों को उजागर कर रही है और लोगों को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है, लेकिन हमें अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव लाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना होगा। जैसे, हमें प्लास्टिक का उपयोग कम से कम करना चाहिए और कचरे का पुनर्चक्रण करना चाहिए। इसके साथ ही अधिकाधिक वृक्षारोपण करना, जल–संचयन करना, बिजली और पानी को बर्बाद न करना तथा यथासंभव निजी वाहनों के बजाय पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करना चाहिए। जब हम सभी मिलकर पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करेंगे, तभी हम एक स्वच्छ और शस्य श्यामल देश बना पाएंगे, जिसमें जैव विविधता के लिए पूरा स्थान होगा और पूरी दुनिया को हम सिखा सकेंगे कि प्रकृति और पर्यावरण के साथ कैसे बर्ताव किया जाता है।

प्रो० रवीन्द्र कुमार
प्राचार्य

संपादकीय

लोकसभा चुनाव हाल ही में संपन्न हुए हैं। जिन मतदाताओं ने चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग किया, वे बधाई के पात्र हैं। इसके बरक्स, जो एक दिन भी घंटे–दो घंटे के लिए धूप में जाकर पंक्तिब) होने से बचते हुए मताधिकार का प्रयोग न करके घरों में बैठे रहे उन्हें इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में कुछ भी धिक्कारने और कोसने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला मतदाता होते हैं, और चुनाव प्रक्रिया में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में, जहाँ जनता द्वारा चुनी हुई सरकार शासन करती है, वहां मतदाताओं की भागीदारी ही यह सुनिश्चित करती है कि शासन जनता की इच्छाओं और जरूरतों के अनुसार हो। वे सजग और जिम्मेदार मतदाता होकर स्वस्थ लोकतंत्र को बनाए रखने में योगदान दे सकते हैं। उनकी जिम्मेदारी होती है कि वे सही और योग्य उम्मीदवार का चयन करे। इसके लिए मतदाता को राजनीतिक दलों की नीतियों, उम्मीदवारों के इतिहास, उनकी योग्यता और उनके वादों की जांच–पड़ताल करनी चाहिए। एक जागरूक मतदाता ही अच्छे नेतृत्व का चुनाव कर सकता है जो देश और समाज की उन्नति के लिए काम करे।

मतदाता को जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के आधार पर नहीं, बल्कि उम्मीदवार की पहचान कर उसकी क्षमता और नीति के आधार पर मतदान करना चाहिए। इससे निष्पक्ष और ईमानदार चुनाव प्रणाली को बल मिलता है, जो कि लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

मतदाता लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षक होते हैं। उनकी भी जिम्मेदारी है कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष हों। इसके लिए उन्हें धन, जाति और अन्य प्रकार के प्रलोभनों से प्रभावित हुए बिना मतदान करना चाहिए। मतदाता की निष्पक्षता और सही निर्णय लोकतंत्र को मजबूत बनाता है।

जागरूक मतदाता नेताओं की जिम्मेदारी तय कर सकते हैं। वे न केवल चुनाव में भाग लेकर सरकार चुनते हैं, बल्कि चुने हुए प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी भी तय करते हैं। वे सरकार की नीतियों और क्रियाकलापों का मूल्यांकन करते हैं और यदि उन्हें लगता है कि सरकार उनकी उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी है, तो अगले चुनाव में उसे सत्ता से बाहर करने का अधिकार भी रखते हैं।

जब मतदाता सही नेतृत्व का चुनाव करते हैं, तो वे देश में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में योगदान देते हैं। एक सशक्त और जिम्मेदार मतदाता लोकतंत्र को स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे विकास और समाज की भलाई सुनिश्चित होती है।

निष्कर्षतः मतदाता की भूमिका लोकतंत्र की आत्मा के समान है। उनका एक वोट देश के भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इसलिए, प्रत्येक मतदाता को अपने मताधिकार का सही ढंग से प्रयोग करना चाहिए, ताकि लोकतंत्र मजबूत हो और समाज के हर वर्ग को उचित प्रतिनिधित्व मिल सके।

प्रो. जयशंकर तिवारी
संपादक, संवाहिका

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

1.	**आपदा प्रबन्धन में पर्यावरण का महत्व** अभिजीत यश भारती, एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर, भूगोल	01–02
2.	**भारतीय संस्कृति** मधु दूबे, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, संस्कृत	03
3.	**विकसता सुख का नवल प्रभात** हर्ष जीत सिंह, बी.एस.सी., षष्ठ सेमेस्टर	03
4.	**जीवन** जिज्ञासा तिवारी, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर	04
5.	**आत्मनिर्भर भारत (युवा विचार)** आयुषी सिंह, बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर	04
6.	**क्या करें बेटियाँ** साधना द्विवेदी, एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर, हिन्दी	05–06
7.	**सशक्त नारी** शक्ति पाण्डेय, बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर	06
8.	**सुकून के दो पल** शिवांगी दूबे, बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर	07
9.	**शांत मन से कविता लिखी नही जाती!** हर्षिता, बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी	07
10.	**मानव सेवा ही सच्चा धर्म** भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी, डॉ. राजीव कुमार अग्रवाल, प्रभारी, रेड क्रॉस सोसायटी	08–09
11	**सोचित-है-काका-ई-प्लास्टिक : अवधी कविता** प्रो. जय शंकर तिवारी, सम्पादक, संवाहिका	10–11
12	**स्वतंत्रता की उत्तर मीमांसा** प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग	12–14

आपदा प्रबंधन में पर्यावरण का महत्व

अभिजीत यश भारती
एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर, भूगोल

पर्यावरण और आपदा प्रबंधन का आपस में गहरा संबंध है। बढ़ते प्राकृतिक आपदाओं और मानवजनित खतरों के चलते पर्यावरण का महत्व और भी बढ़ गया है। प्रभावी आपदा प्रबंधन के लिए पर्यावरण की स्थिति और उसकी सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह लेख वर्तमान स्थिति में आपदा प्रबंधन में पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डालता है।

पर्यावरणीय कारक और आपदाएं–

पर्यावरणीय कारक विभिन्न प्रकार की आपदाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैसे:

1. जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता और आवृत्ति में वृद्धि हुई है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण बाढ़, सूखा, तूफान और जंगल की आग जैसी घटनाएं बढ़ी हैं।
2. वन विनाश: वनों की कटाई से पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो जाता है, जिससे बाढ़ और भूस्खलन की संभावना बढ़ जाती है। वन भूमि का अवैध अतिक्रमण भी जलवायु परिवर्तन को तेज करता है।
3. जल प्रदूषण: जल प्रदूषण न केवल मानव स्वास्थ्य पर असर डालता है, बल्कि यह बाढ़ और सूखे जैसी आपदाओं के दौरान स्थिति को और खराब कर देता है।
4. भूमि क्षरण: कृषि और अवसंरचना विकास के लिए भूमि का अत्यधिक उपयोग भूमि क्षरण का कारण बनता है, जिससे भूस्खलन और बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है।

आपदा प्रबंधन में पर्यावरण का महत्व–

1. पूर्वानुमान और तैयारी: पर्यावरणीय डेटा और मॉनिटरिंग सिस्टम के जरिए आपदाओं का पूर्वानुमान और उनकी तैयारी करना संभव हो पाता है। जैसे मौसम विज्ञान और हाइड्रोलॉजी का उपयोग करके बाढ़ और तूफानों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
2. शमन और रोकथाम: पर्यावरणीय संरक्षण उपायों के माध्यम से आपदाओं को रोकने और उनके प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। जैसे, वनों का संरक्षण, मैंग्रोव जंगलों की रक्षा, और जल संसाधनों का प्रबंधन बाढ़ और तटीय आपदाओं को कम करने में सहायक हो सकते हैं।
3. प्रतिक्रिया और राहत: आपदा के बाद पर्यावरणीय दृष्टिकोण से पुनर्निर्माण और राहत कार्यों का संचालन किया जाना चाहिए। जैसे, बाढ़ के बाद प्रदूषित जल स्रोतों की सफाई, वनस्पति बहाली, और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए उपयुक्त कदम उठाने चाहिए।
4. सामुदायिक भागीदारी: पर्यावरणीय जागरूकता और समुदाय की भागीदारी आपदा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्थानीय समुदायों को पर्यावरणीय संरक्षण के महत्व और आपदा प्रबंधन की तकनीकों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ–

वर्तमान में, कई देश आपदा प्रबंधन में पर्यावरणीय दृष्टिकोण को अपनाने की दिशा में कदम उठा रहे हैं, लेकिन चुनौतियाँ अब भी मौजूद हैं:

1. सूचना की कमी: आपदा प्रबंधन के लिए आवश्यक पर्यावरणीय डेटा और जानकारी की कमी एक बड़ी चुनौती है।
2. वित्तीय संसाधनों की कमी: पर्यावरणीय संरक्षण और आपदा प्रबंधन के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों की कमी।

3. नीति और योजना की कमीः प्रभावी आपदा प्रबंधन के लिए स्पष्ट और मजबूत नीतियों की आवश्यकता है, जो कई जगहों पर अभी भी अधूरी हैं।
4. सामाजिक और राजनीतिक बाधाएँः सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर पर्यावरणीय संरक्षण और आपदा प्रबंधन के लिए समर्थन की कमी भी एक चुनौती है।

समाधान और सिफारिशें–

1. डेटा संग्रह और विश्लेषणः आपदा प्रबंधन के लिए आवश्यक पर्यावरणीय डेटा का संग्रह और विश्लेषण बढ़ाना चाहिए। उपग्रह, ड्रोन, और अन्य तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके यह संभव है।
2. सतत विकासः सतत विकास के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए, जिससे पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन बना रहे।
3. नीति निर्माणः स्पष्ट और मजबूत नीतियाँ और योजनाएँ बनानी चाहिए जो पर्यावरणीय दृष्टिकोण से आपदा प्रबंधन को प्राथमिकता दें।
4. अंतर्राष्ट्रीय सहयोगः विभिन्न देशों के बीच आपदा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
5. शिक्षा और जागरूकताः समुदायों को पर्यावरणीय संरक्षण और आपदा प्रबंधन के महत्व के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष–

आज की बदलती जलवायु और बढ़ती प्राकृतिक आपदाओं के बीच, आपदा प्रबंधन में पर्यावरण का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। प्रभावी आपदा प्रबंधन के लिए हमें पर्यावरणीय दृष्टिकोण को अपनाना होगा और इसके संरक्षण के लिए सामूहिक और व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करना होगा। इससे न केवल वर्तमान समस्याओं का समाधान हो सकेगा, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और समृद्ध पर्यावरण भी सुनिश्चित हो सकेगा।

भारतीय संस्कृति

मधु दूबे
बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर, संस्कृत

भारतीय संस्कृतिः विश्वस्य सर्वासु संस्कृतिषु जननी अस्ति यतोहि विश्वस्य सर्वासु संस्कृतिषु अस्माकं संस्कृतिः प्राचीनतमा अस्ति आर्य, गन्धर्व, गुप्तमौर्य, मुगल इत्यादयः बहवः आक्रमणकारिणः अस्माकं देशे आगत्य शासनं कृतवन्तः परन्तु अस्माकं न भग्नाः संस्कृतिः किञ्चित् अपि कर्तुं शक्नोति स्म तथा च जनाः अत्यन्तं भक्त्या अनुसरणं कुर्वन्ति स्म। अद्यत्वेऽपि जनाः यदा यदा अवसरः प्राप्यते तदा तदा भारतदेशस्य कृते मृत्यवे सज्जाः सज्जाः च सन्ति। अद्यत्वे अपि विविधाः वृक्षाः – पीपल, नीम, महुआ, आम्ला इत्यादयः शताब्दशः पूजिताः सन्ति। अस्माकं मातरः नीमं भगवतः यथार्थरूपं मन्यन्ते, तां पूजयन्ति च। अद्यत्वे अपि बालकाः स्वपितामह्याः कथाः, लोरी–गीताः च रात्रौ यावत् श्रोतुं रोचन्ते । माता पुत्राय यत् प्रेम स्नेहं च ददाति तत् अन्यस्मिन् संस्कृतिषु न लभ्यते ।

विकसता सुख का नवल प्रभात

हर्ष जीत सिंह
बी.एस.सी, षष्ठ सेमेस्टर

वसुधा पर घोर तम का विस्तार हुआ,
सारे जग मे कुछ पल का मौन हुआ ,
हवा में फैला शहरी धुआं शांत हुआ ,
पक्षियों के कलरव का अल्प विराम हुआ,
तब व्योम में शशि किरणों का अधिकार हुआ।

सूर्य का प्रकाश सिमट सा गया,
जीवन क्षणिक थम सा गया ,
वाहनों का कोलाहल भी रुक गया ,
मंद शीतल पवन का फैलाव हुआ ,
तब नभ में कुछ बिंदुओं का आगाज हुआ।

रातें अनकही सी बहुत कुछ सिखा गई ,
एक नये सवेरे की राह बता गयी,
धरो धीर , वेदना दीर्घकालिक कभी न हुई ,
रात्रि के संघर्ष से ही प्रकाश का उदय हुआ ,
धरा पर फिर नव आशा का संचार हुआ।

जीवन

जिज्ञासा तिवारी
बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर

है कठिन बड़ा यह जीवन मेरा
क्या आसान बना पायेगे
जो छूट गया इस दौर में
क्या वापस मिल जायेगा
हैं कठिन. ....
खुशियाँ कम है,गम है ज्यादा
कर बैठे कुछ ज्यादा ही वायदा
मैं खो जाती हूँ कुछ ही पल में
क्या होगा मेरा इस जग में
हैं कठिन. ....
मैं सब को गले लगाती हूं
फिर खुद ही मैं पछताती हूं
हर दिन मैं यूँ ही बिताती
नई–नई उम्मीदे पाती
हैं कठिन..................
कुछ दिन ही शेष बचे है शायद
कही न ये निकल जाए
कुछ एसे जकड़ लो समय को
ये वापस फिर निकल न जाए
हैं कठिन........................

आत्मनिर्भर भारत (युवा विचार)

आयुषी सिंह
बी.ए., द्वितीय सेमेस्टर

जीऐं है अब तक दूसरों के सहारे,
अब खुद आगे बढ़ कर दिखाना हैं।
जो हम बोला करते थे दूसरे की जुबानी,
अब पूरे विश्व को अपनी भाषा है सिखानी।
ए–सोने की चिड़िया अब तुझे सोने का अम्बर बनाना है,
और अपने विकास के गीत को उड़कर सुनाना है।
जो चुप थे अब तक उनको बोल कर दिखाना है,
प्रगति की राह पर हमें बढ़ कर दिखाना हैं।
दूसरे देशों से हमें क्या करना ,
हमें अपना आत्मनिर्भर भारत बनाना है।।

क्या करें बेटियां !

साधना द्विवेदी
एम.ए., द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

क्या करें बेटियां, जब है बेटियां पांच
तो क्यों भगवान, आप नहीं हो साथ
क्या एक पिता कर दे कत्ल, संतानों का या समाज से लड़कर, खुद को त्याग दे ।
हे भगवान !क्या करें पिता
जब है संतानें ज्यादा, तो क्यों नहीं धैर्यशीलता दी पिता को
क्या ही करें बेटियां
सुनकर ताने नहीं रहा जाता, हे भगवान ! अब तू ही बता
क्या करें बेटियां
सुबह शाम हो लड़ाई घर में, पिता कहता जला दूं सबको मैं क्या ?
हुई बड़ी बेटियां शादी की उम्र हुई, क्या करे पिता ना आय है उसकी
इतनी की कर दे शादी उनकी, पढ़ा रहा है सबको
सोचता है सब पढ़कर ,अपना दुख दूर करेंगी
लेकिन यह समाज नहीं सोचने देता उनको ऐसा, है पिछड़ी सोच परिवारों की,
एक पिता ही है जो सोचता है बेटियों के लिए
लेकिन अब नहीं जीने देता है समाज उसको ना खुद कुछ करना है उससे ,
बस पीड़ा देना है पिता को शादी करवाने के पीछे पड़ा है उनकी
पिता को हर दिन लड़ना पड़ता है इस समाज से
पैसे हो गए खर्च पढ़ाई करवाने में उनकी
कुछ ना इकट्ठा रखा उन्होंने, अब शादी – शादी चिल्लाता समाज बेटियों की
क्या करें पिता कहां से करे शादी उनकी, जहां देखो बस पैसा चाहिए
पैसा अच्छा खासा चाहिए दहेज में दौलत दे दो शादी कर लो
हर तरफ यही रीति बनी, लड़की गुणीं हो पढ़ी हो, नौकरी करने वाली हो,
पिता दहेज भी अच्छा दे।
हे प्रभु !कैसे करे पिता यह सब।
जब दी बेटियां पांच, तो धैर्य क्यों नहीं दिया पिता को
समाज से लड़ने का साहस क्यों नहीं दिया पिता को
हे प्रभु ! वो सहारा मांग रहा है तेरा, क्यों नहीं देता साथ उसका तू,
तू दे सहारा उस पिता को।
तू साथ आ, तू साथ आ ।
तू दे सहारा उन बेटियों को, तू दे सहारा बेटियों को
उड़ सके आसमान में वह भी, क्या अधिकार नहीं उन्हें उड़ने का
क्यों बांधता जंजीर उसके, क्या नहीं होगी शादी उसकी, तो,जल जाएगा संसार सारा।
क्यों बेटियां ही त्याग करें, क्यों बेटों को नहीं बनाया ऐसा आपने
अब कहते हैं लोग, फर्क नहीं बेटा बेटी में, क्या हुआ यहां उसे
क्यों समाज चोट करता है बेटियों को, क्या नहीं, होती लाडली लड़की सबकी ।
हे भगवान !तू देर मेरे पिता को, बिना तेरे साथ के लड़खड़ा रहा है पिता ,

सोच उसकी है सही, पर समाज काट रहा है जड़ उसकी,
मांगता सहारा तेरा, उस पिता को संभाल उसे दे सहारा
कहीं लंगड़ा न कर दे समाज उसकी सोच को
फिर हो जाए कत्ल उससे।
जब दी बेटियां पांच ,तो दे सहारा उससे प्रभु !
तो दे सहारा उससे प्रभु!
हे प्रभु! आस तेरी, कर रही हूँ मै अकेली, कर रही हुं मै अकेली
तू दे शक्ति इन बेटियों को, तू दे सक्ति इन बेटियों को
छू सके आसमान को, गर्व से ऊंचा कर पिता का सर
समाज को आईना दिखा सके, हे प्रभु ! तू दे शक्ति दे इन बेटियों को
हे प्रभु ! तू दे शक्ति इन बेटियों को।

सशक्त नारी

शक्ति पाण्डेय
बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर

नारी हो गर्व करो तुम खुद पर ,
विश्वास करो तुम अपनी क्षमता पर ।
अद्‌भुत शक्ति से परिपूर्ण तुम हो नारी ,
सजी धजी रंगो से भरी तुम हो प्यारी || 1 ||

जबसे तुमने शिक्षा को अपना आभूषण बनाया है ,
उसने तुम्हारी खूबसूरती में चार चाँद लगाया है ।
दीप्ति से परिपूर्ण तुम हो नारी ,
सजी धजी रंगो से भरी तुम हो प्यारी || 2 ||

जबसे तुमने अपनी खूबियों को निखारा है ,
खेल , शिक्षा हो या स्वास्थ्य हर क्षेत्र में नाम कमाया है ।
जोश एंव उत्साह से परिपूर्ण तुम हो नारी ,
सजी धजी रंगो से भरी तुम हो प्यारी || 3 ||

जबसे तुमने इस परम्परागत रूढ़ियों को तोड़कर अपना कदम आगे बढ़ाया है ,
अपने सपनों में उड़ान भर परिवार , देश सभी का गौरव बढ़ाया है ।
आत्मविश्वास से परिपूर्ण तुम हो नारी
सजी धजी रंगो से भरी तुम हो प्यारी || 4 ||

सुकून के दो पल

शिवांगी दूबे
बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर

आओ दो पल हम सकून से बैठते हैं,
आओ हम सकून लिखते हैं
शान्ति तो जैसे चली ही गई हो इस जहाँ से,
फिर भी कोशिश करते हैं,
इस रंगीन महफिल से निकलकर
खुद को तराशते है,
आओ हम सुकून से बैठते हैं,
आओ हम सुकून से लिखते है
मिलते हैं किसी नदी के किनारे पर
छोड़ कर सारी बातों को
बहुत हो गई खलिश दुनिया की
कुछ अपनी कहते हैं कुछ तुम्हारी सुनते हैं।
आओ हम सुकून से बैठते है
आओ हम सुकून लिखते हैं।
कुछ नया सीखते हैं इस प्रकृति से
पक्षियों से नयी राग सीखते हैं
चलो कुछ अलग करते हैं
आओ हम सुकून से बैठते हैं
आओ हम सुकून से लिखते हैं।

शांत मन से कविताएँ नहीं लिखी जातीं !

प्रियांशी उपाध्याय
बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर

शांत मन से.. कविताएँ नहीं लिखी जातीं !
शांत केवल.. वातावरण ही उपयुक्त लगता है।
कविताएँ...
दरअसल लिखी ही नहीं जातीं हैं !
कविताएँ तो मन के भावों की तरह बहती जाती हैं..।
और हम, हम बस उन्हें शब्दबद्ध करने की मात्र
चेष्टा भर करते हैं ।
सबसे सुंदर कविताएँ...
उल्लास और वेदना की पराकाष्ठा पर रची जाती हैं।
और ऐसी कविताएँ..
केवल हृदय तक पहुँचती ही नहीं बल्कि
अंतःस्तल को भेद आर–पार हो जातीं हैं !!

मानव सेवा ही सच्चा धर्म

भारतीय रेड क्रास सोसायटी
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज इकाई, गोण्डा
प्रतिवेदन वर्ष २०२३-२४

डॉ. राजीव कुमार अग्रवाल
प्रभारी, रेड क्रॉस इकाई

रेड क्रास इकाई में शैक्षणिक सत्र 2023–24 में 118 विद्यार्थियों ने सेवा के इस कार्य हेतु पंजीयन कराया। रेड क्रास के स्वयंसेवक सभी राष्ट्रीय पर्वों पर उपस्थित रहे। वर्ष भर रेड क्रास इकाई ने सक्रिय रहकर कॉलेज में प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की।

19 अगस्त 2023 को कॉलेज की रेड क्रास इकाई ने जनपद गोण्डा रेड क्रास इकाई के सौजन्य से प्राथमिक चिकित्सा पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। इस अवसर पर डॉ0 ए0पी0 सिंह– मुख्य चिकित्साधिकारी, श्रावस्ती ने रेड क्रास स्वयंसेवकों को प्राथमिक चिकित्सा व सी0पी0आर0 की ट्रेनिंग दी। उन्होंने यह बताया कि यदि समय रहते मरीज को सही उपचार दे दिया जाए तो उसकी जान बचाई जा सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि प्राथमिक 3 मिनट अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। इसी में मरीज की जाँच करके यदि सी0पी0आर0 की आवश्यकता हो तो इसे तुरन्त प्रारम्भ कर देना चाहिये तथा एम्बुलेन्स को बुला कर निकट के अस्पताल में मरीज के परिवहन का प्रयास करना चाहिये।

डॉ0 ए0पी0 सिंह ने यह बताया कि उनका लक्ष्य एक साल में दस हजार लाइफ सेवर तैयार करना है। जिसका प्रारम्भ उन्होंने आज कॉलेज इकाई से किया। जनपदीय इकाई की ओर से कॉलेज के स्वयंसेवकों को रेड क्रास लोगो वाली टी शर्ट उपलब्ध करायी गयीं।

इस अवसर पर वर्षा सिंह– कॉलेज प्रबन्ध समिति की उपाध्यक्ष, सैय्यद हाकिम अली– संरक्षक, भारतीय रेड क्रास सोसायटी गोण्डा, तथा सदस्यगण– राम प्रकाश गुप्त, डॉ0 ओंकार पाठक, एस0एन0 सिंह, प्रवीण सिंह, हेमंत पाठक, पंकज कुमार सिन्हा, आई0बी0 श्रीवास्तव, डॉ0 रंजीत सिंह राठौर सहित कॉलेज के आचार्यगण सहित अन्य अतिथि उपस्थित थे। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

वर्ष में रेड क्रास इकाई की कई मीटिंग आयोजित की गयीं। जिनमें स्वयंसेवकों को रेड क्रास के उद्‌भव व गतिविधियों से परिचित कराया गया। मरीज के परिवहन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

निबन्ध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयी। निबन्ध प्रतियोगिता का विषय ''आधुनिक समय में रेड क्रास की उपयोगिता'' था। इसमें नन्दिनी पुत्री प्रवीन्द्र कुमार को प्रथम, राघवेन्द्र प्रताप सोनकर पुत्र कालिका प्रसाद को द्वितीय तथा अंकित भास्कर पुत्र केशव चरन लाल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। पोस्टर प्रतियोगिता का विषय ''मरीज का परिवहन'' था। इसमें अंकित भास्कर पुत्र केशव चरन लाल को प्रथम, गुलशन पुत्र अमरूद्दीन को द्वितीय तथा नन्दिनी पुत्री प्रवीन्द्र कुमार को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का विषय ''रक्तदान'' था। इसमें बबिता आनन्द पुत्री गया प्रसाद को प्रथम, नन्दिनी पुत्री प्रवीन्द्र कुमार को द्वितीय तथा अंकित भास्कर पुत्र केशव चरन लाल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

8 से 10 अप्रैल के मध्य रेड क्रास का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर कॉलेज के विज्ञान परिसर स्थित कान्फ्रेन्स हॉल में आयोजित होना था जिसमें लगभग 50 स्वयंसेवकों ने अपना पंजीयन कराया था। इस हेतु आशीष शर्मा, ट्रेनर ने अपनी सहमति प्रदान की थी। परन्तु एक दिन पूर्व उन्होंने सूचित किया कि उनके पिताश्री को ब्रेन हैमरेज होने के कारण वे आने में असमर्थ हैं। अतः प्रशिक्षण शिविर को स्थगित करना पड़ा। तत्पश्चात, कॉलेज परिसर लोकसभा चुनाव हेतु प्रशासन ने ले लिया। सम सेमेस्टर की परीक्षायें 31 मई, 2024 से प्रारम्भ होने व गर्मी की छुट्टियाँ घोषित हो जाने के कारण इस वर्ष वार्षिक प्रशिक्षण शिविर नहीं हो पाया।

11 मई 2024 को कॉलेज के विज्ञान परिसर में स्तन कैंसर के बारे में जागरूकता अभियान के अन्तर्गत एक वार्ता

रोटरी क्लब गोण्डा ग्रीन के सहयोग से आयोजित की गयी। इस वार्ता में वार्ताकार जनपद की प्रतिष्ठित स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ0 अंजू अग्रवाल थीं। उन्होंने बताया कि महिलाओं में स्तन कैंसर की सम्भावना अधिक रहती है, परन्तु यदि प्राथमिक अवस्था में इसका पता लग जाये तो इसका प्रभावी उपचार सम्भव है, जीवन प्रत्याशा को बढ़ाया जा सकता है, कम लागत में इलाज हो सकता है तथा अंग भंग व अन्य जटिलताओं से बचा जा सकता है। प्राथमिक अवस्था में इसका पता लगाने के लिये उन्होंने स्तन परीक्षण विधि को विस्तार से प्रदर्शित किया। इस अवसर पर शहर के प्रसिद्ध सर्जन व प्रबन्ध समिति के सदस्य डॉ0 आलोक अग्रवाल, प्रबन्ध समिति की सदस्य श्रीमती सुषमा त्रिपाठी भी उपस्थित थीं। डॉ0 अंजू अग्रवाल ने श्रोताओं की शंकाओं का समाधान भी किया।

अतिथियों का स्वागत प्राचार्य प्रोफसर रवीन्द्र कुमार ने किया। प्रोफेसर राजीव कुमार अग्रवाल– इंचार्ज, रेड क्रास इकाई ने अतिथियों का परिचय कराया तथा कार्यक्रम की उपादेयता के विषय में बताया। इस वार्ता का लाभ कॉलेज परिवार की शिक्षिकाओं तथा छात्राओं ने प्राप्त किया। डॉ0 रेखा शर्मा ने छात्राओं का फीडबैक देते हुये बताया कि कार्यक्रम के बाद अनेकों छात्राओं ने उनसे सम्पर्क किया और बताया कि उन्हें कुछ समस्यायें हैं जिन्हें वे अपने माता–पिता को भी नहीं बता पा रही थीं। अब वे माता–पिता से इन्हें बताकर उचित इलाज करायेंगी।

हमारी गतिविधियों को प्रबुद्ध पाठकों तक पहुँचाने के लिए हमारी इकाई मीडिया का आभार व्यक्त करती है। हमारी इकाई महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति तथा प्राचार्य की आभारी है जिनका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग निरंतर प्राप्त हुआ। अन्त में हम परमपिता परमात्मा के प्रति नतमस्तक हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि हमें सदैव ऐसी शक्ति प्रदान करें कि हम मानवता की सेवा कर सकें।

जय हिन्द! जय भारत! जय रेड क्रास!

सोचित-है-काका-ई-प्लास्टिक

अवधी कविता

(विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर)

प्रो. जय शंकर तिवारी
संपादक, संवाहिका

सोचित है काका कहाँ बनत
ई प्लास्टिक पन्नी बहुरुपिया
कौनौ करिया कौनौ उज्जर
देखै मा नीक जरै छतिया।

माटी मइहाँ मिलै न कब्बो
बरै प्रदूषन, सरै न कब्बो
ई प्लास्टिक जिउ कइ जंजाल
सुविधा बहुत प्रकृति बेहाल।

पैकिंग पन्नी रैपर पन्नी
सहरौम पन्नी गावौंम पन्नी
दूर परबतन पर पन्नी
कतनी पन्नी कतनी पन्नी।

खेतेम पन्नी घूरेम पन्नी
पशुअन के चारा म पन्नी
गोरुअन के पेटेम म पन्नी
मनइन के भेजा म पन्नी।

कुछ चाह पियत हैं पन्नी मा
कुछ छाछ पियत है पन्नी मा
कुछ पन्नी फारत लोटत हैं
धरती अकास है पन्नी मा।

नद्दिम म पन्नी पोखरौ म पन्नी
है चारिउ ओर पन्नी–पन्नी
ई पन्नी अमरामूरि पिए
लागत है रकतबीज पन्नी।

हे मुन्ना ! सुनौ बताइत है
समझेन है जौन जनाइत है
पुरखै अपने हुसियार रहे
ई तुहंका हम समझाइत है।

ई मनई है यहकइ कारन
सुख भोगइ कइ चाहत कारन
ज्यादा चतुराई हइ कारन
दुर्बुद्धि होय यहकय कारन।

ई मनई कइ करतूत होय
ई पढ़े–लिखे कइ किरला है,
सेठन कइ मुनाफा बढ़त जाय
बाकी मनई मरघिल्ला है।

कुछ लोग कहैं, न बनै पन्नी
फैक्ट्री से न निकलय पन्नी
एकरे जगह कुछ और करौ
देखा चाहित नाहीं पन्नी।

प्लास्टिक से पिंड छुड़ावैक है
अपने आदति का सुधारैक है
हाट बजार जाव जौ भइया
झोरा–थैला अपनावैक है।

सरकारौ का सख्त होएक परी
हमहूँ तुहूँ का जागैक परी
मनइन का अपने आदति मा
बढियाँ बदलाव करैक परी।

पच्छूँ देसवा गोरहर मनई
सैली संसकीरति है खराब
फँसेन सभे वहके चक्कर मा
अब यहि वरहन से बचौक परी।

प्रकृति का जीतइ कइ इच्छा
हत्यारी है, अविवेकपूर्ण
जब बचे न धरती तू बचबौ ?
हौ चतुर मुला पक्का विमूढ़।

तू पृथिवी दिवस मनावत हौ
नौटंकी खूब करावत हौ
देसवन कइ मुखिया सुनौ सभे
स्वारथ कइ ढप्प बजावत हौ !

हम आपन बात कही कसकइ
कुछ कहत–सुनत न बनै हमसे
अपने देसवा औ पुरखन कइ
तारीफ करी केहसे–केहसे।

धरती माता नद्दी माता
सुर्ज चंदरमा पूजिन वै
पेड़–पकड़िया गोरू–बछरू
सबकै धरम मनाइन वै।

न केहूके साथे बुरा किहिन
न मुँह कइ कौर केहुक छोरिन
थोरेन म वय संतोस किहिन
मुल केहू कइ नाहीं आहि लिहिन।

जयशंकर जय–जयकार करैं
अवधी माटी से प्यार करैं
धरती माता बची रहैं
सबसे वै अरदास करैं।

स्वतंत्रता की उत्तर मीमांसा

प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

'स्वतंत्रता' धरती के कुछ अनमोल शब्दों में से एक है। विश्व की सभी भाषाओं में इसकी उपस्थिति देखी जा सकती है। मनुष्य के भाषा ज्ञान के साथ–साथ स्वतंत्रता शब्द विभिन्न प्रतिरूपों, पर्यायों के रूप में अवस्थित है। स्वतंत्रता शब्द की व्याप्ति और अर्थवत्ता के अनेक आयामों का उद्‌घाटन विचारकों द्वारा किया गया है। विभिन्न भाषाओं में परिप्रेक्ष्य, परिवेश के आधार पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक मूल्यों का अवलोकन किया जा सकता है। मानव जीवन की समस्त गतिविधियों एवं उसके चिंतन संदर्भों में इसके अवधारणात्मक विकास की भी एक गहरी समृद्ध परंपरा रही है। भारतीय भाषाओं में स्वतंत्रता शब्द की उपस्थिति के अनेक आयाम है।

भारतीय नागरिकों के लिए स्वतंत्रता की अवधारणा अति महत्वपूर्ण रही है। भारतीय परंपरा में स्वतंत्रता के स्वतंत्र चिंतक एवं विचारक नहीं हैं। नैसर्गिक स्वतंत्रता की पक्षधरता 'सर्वे भवंति सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसे महाभाव के अंतर्गत व्यक्त की गई है, जिसमें स्वतंत्रता को अंतर्भुक्त कर लिया गया है। लम्बे समय तक गुलामी के बाद 1947 के पूर्व स्वतंत्रता की अर्थवत्ता भारतीय जनजीवन में जो महत्व रखती थी, वह 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' सूत्र कथन से समझा जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश को संविधान मिला। भारतीय 'जन' प्रजा से आगे बढ़कर देश के 'नागरिक' रूप में प्रतिस्थापित हुए और संविधान में उन्हें भारतीय नागरिक के रूप में उनके गरिमा एवं सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए कई तरह की स्वतंत्रताओं का प्रतिपादन किया गया।

स्वतंत्रता जिसे स्वाधीनता, आजादी या मुक्ति भी कहा गया है, त्रिआयामी है। प्रथम, वरण करना, द्वितीय, व्यवहार में आने वाली बाधाओं का अभाव, तीसरा, प्रेरक परिस्थितियाँ। जैसे, कोई बाइक चलाने के लिए स्वतंत्र है तो उसे वरण करना होगा कि वह बाइक चलाना चाहता है, दूसरा, उसे व्यावहारिक तौर पर रोका न जाए, तीसरा, उसे ऐसी परिस्थिति मिले कि वह बाइक चला सके अर्थात् एक बाइक उपलब्ध हो, उसे बाइक सिखाने वाला हो और एक सुरक्षित सड़क हो, जहां बाइक चला सके। इन तीनों में से किसी एक की अनुपस्थिति बाइक चलाने की स्वतंत्रता में बाधक सिद्ध होगी अर्थात् स्वतंत्रता के संबंध में विचार करते हुए सूत्र रूप में कहा जा सकता है कि क्या स्वतंत्र है या अ–स्वतंत्र है, किससे स्वतंत्र है या अ–स्वतंत्र है और क्या करने या बनने के लिए स्वतंत्र है या अ–स्वतंत्र है ।

राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में थॉमस हाब्स 'क्रिया' की स्वतंत्रता में आने वाली बाधाओं की अनुपस्थिति को स्वतंत्रता करार देते हैं। जॉन लॉक के यहां स्वतंत्रता एक नैतिकता पूर्ण 'चयन' के रूप में परिभाषित है। रूसो के चिंतन में स्वतंत्रता एक 'सामूहिक उपक्रम' है जिसके अंतर्गत सार्वजनिक हित के लिए स्वार्थी आग्रहों से मुक्त होना आवश्यक है। जेरेमी बेन्थम ने उपयोगितावाद के आधार पर स्वतंत्रता को 'सुख' प्राप्त करने और 'दुःख' से बचने का उपक्रम माना है। मिल ने 'ऑन लिबर्टी' में स्वतंत्रता के तीन आयामों की चर्चा की है। पहला, विचार और बहस की स्वतंत्रता, दूसरा, वैयक्तिकता और तीसरा, व्यक्ति के आचरण पर प्राधिकार की सीमा। प्रसिद्ध विचारक कार्ल मार्क्स अ–स्वतंत्रता के माध्यम से स्वतंत्रता को समझने का उपक्रम करते हैं। इनके यहां स्वतंत्रता आत्म–विकास के बिना संभव नहीं हो सकती। समकालीन विचारक इसैया
बर्लिन ने स्वतंत्रता की अवधारणा को सकारात्मक और नकारात्मक वर्गों में बांटते हुए एक–दूसरे का पूरक स्वीकार किया है। भारतीय संदर्भों में स्वतंत्रता के बगल खड़ा हुआ शब्द है –'मुक्ति', जिसे आध्यात्मिक अर्थों में 'मोक्ष' कहा गया है। कालांतर में जिसका अर्थ हुआ सामाजिक–राजनीतिक बंधनों से मुक्ति। आजादी के अमृत काल में हम यह कह सकते हैं कि भारतीय नागरिकों को राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त हो चुकी हैय सामाजिक,आर्थिक स्वतंत्रता के मार्ग पर वह निरंतर अग्रसर है। आज मध्य वर्ग का जैसे–जैसे विस्तार हो रहा है, स्वतंत्रता का विचार उच्च वर्ग की तरह व्यक्तिगत होता जा रहा है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता के लिए 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है– अपना शासन या अपने ऊपर शासन अर्थात् जहां स्वतंत्रता का एक अर्थ संवैधानिक और राजनीतिक स्वतंत्रता है, वहीं उसका दूसरा अर्थ सामाजिक, सामूहिक स्वतंत्रता है। गांधी जी परंपरा की जकड़न से मुक्ति के साथ पाश्चात्य सांस्कृतिक आतंक से भी मुक्ति चाहते हैं, जिसके लिए आत्मगौरव की उपलब्धि, अपने उत्तरदायित्व की समझ और आत्ममुक्ति की क्षमता का विकास आवश्यक है। भारतीय संविधान में मूलाधिकारों

के अंतर्गत स्वतंत्रता का उल्लेख है। संविधान के अनुच्छेद–19 में विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रताओं का उल्लेख किया गया है। वहीं पर अनुच्छेद–21 में स्वतंत्रता की सीमाएं भी परिभाषित की गयी है। भारतीय संविधान केवल भारतीय नागरिकों के लिए ही नहीं वरन् वह जीवन के अधिकार और निजी स्वतंत्रता को मानव अधिकार के रूप में स्थापित करता है।

स्वतंत्रता के सकारात्मक, नकारात्मक परिदृश्य स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक देखे जा सकते हैं। स्वतंत्रता का उपयोग कम दोहन ज़्यादा हो रहा है बिल्कुल प्राकृतिक संसाधनों की तरह। व्यक्तियों, संघों, संगठनों, संस्थाओं, समूहों, दलों अथवा पार्टियों द्वारा संविधान प्रदत्त स्वतंत्रताओं का जिस तरह से उपयोग किया जा रहा है उस पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है। आजादी के इन 75 वर्षों में हमने 'क्या खोया क्या पाया', उसका मूल्यांकन आवश्यक है।

लोकतंत्र की प्राप्ति से 75 वर्षों की यात्रा में 'स्वतंत्रता की पुनर्व्याख्या' के दौर चले हैं। वहीं यह कहा जाने लगा है कि आज सुशिक्षित जन लोकतंत्र से ऊब गए हैं। नागरिकों के चयन या चुनाव की स्वाधीनता मनुष्य की गरिमा को नकार रही है। समाज में विवेक और तर्कबुद्धि की स्थिति खराब होती जा रही है। यह समय बुद्धि विरोध का है। उत्तर सत्य (पोस्ट ट्रुथ) का समय है। स्वतंत्रता के नाम पर घोर मनुष्य विरोधी आक्रामकता और शुद्ध विवेकहीनता को उचित ठहराया जा रहा है। संभवतः यही कारण रहा होगा कि चर्चिल ने कहा था कि आजादी के दस वर्षों के भीतर ही भारतीय खुद कहेंगे कि अंग्रेज वापस आएँ और राजकाज संभालें। क्योंकि अंग्रेजों को लगता था कि वह बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से असमर्थ लोगों को सभ्य बनाने का भार वहन कर रहे हैं।

लोक 'स्व' की स्वायत्तता और गरिमा बढ़ाने की बजाय उन्हें घटाने की कोशिश कर रहा है। आज स्वतंत्रता से उत्पन्न लोकतंत्र में स्वतंत्रता की जगह लगातार कम हो रही है। नागरिक जीवन और राज्य से जुड़े सभी विषय राजनीति के अधीन हो गए हैं। लोकतंत्र 'बहुमत की तानाशाही' का शिकार हो गया है। आज स्वतंत्रचेता नागरिक की जगह हम एक संख्या में तब्दील हो गए हैं, जिसे हम मतदाता कहते हैं। स्वतंत्रता अब पुस्तकीय ज्ञान के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। असहमति और निडर अभिव्यक्ति का कोई स्थान नहीं दिखाई दे रहा है। हमारी जनसंख्या बढ़ती जा रही है और हमारा 'जन' अकेला, निरुपाय और बौना। संसद में पूर्व राजघरानों, उद्योगपतियों और अपराधियों की बहुसंख्यक उपस्थिति हमें आतंकित करती है। लोकतंत्र 'लोक' विहीन होता जा रहा है और 'तंत्र' सर्वत्र स्वतंत्र। जनमत से 'जन' बाहर कर दिया गया है। संविधान में लगातार किए जा रहे संशोधन स्वतंत्रता, सरकार और नागरिक के संबंधों को सीमित कर रहा है। वहीं उच्चतम न्यायालय उनकी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। उच्चतम न्यायालय के कई निर्णयों के द्वारा स्वतंत्रता और उससे जुड़े हुए मूल्यों की लगातार रक्षा की जा रही है। अलग–अलग विचारधाराओं की सरकारों द्वारा नियंत्रित नागरिक समाज भटकाव का शिकार है। वहीं देश अपनी परिपक्व राजनीतिक एवं आर्थिक प्रबंधन का प्रयोग स्वतंत्रता की रक्षा के लिए नहीं कर पा रहा है। गौरतलब है कि आज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार की चर्चा मौन रहने की विवशता के साथ किया जाता है। संवैधानिक प्रावधान तुष्टिकरण की राजनीति के शिकार हो गए हैं।

स्वतंत्रता के लिए समानता और बंधुत्व अनिवार्य है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए इनका समन्वय अपरिहार्य है। संविधान ने धर्म के साथ–साथ सांस्कृतिक स्वतंत्रता दी है किंतु इसके साथ ही संविधान में राज्य को वैज्ञानिक चेतना के निर्माण का गंभीर उत्तरदायित्व भी दिया है। जिसमें वोट बैंक की राजनीति के कारण शासन–प्रशासन निष्क्रियता का शिकार है।

सम्प्रति! राजनीतिक लोकतंत्र के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र हमारे बेहतर भविष्य की आवश्यकता है। भारत के संविधान की उद्देशिका में नागरिकों के लिए किए गए विधानों की अनिवार्यतः पूर्ति आवश्यक है। प्रथम– सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्यायय द्वितीय– विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रताय तृतीय– प्रतिष्ठा और अवसर की समानताय चतुर्थ– व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता, अखंडता और आश्वस्त करने वाली बंधुता। उद्देशिका में आपातकाल में किया गया परिवर्तन अस्वीकार है। कई जनहित याचिकाएं माननीय उच्चतम न्यायालय में लंबित हैं। भारत के मूल हस्तलिखित एवं सचित्र संविधान को जनहित याचिका के माध्यम से उपलब्ध कराया गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत सरकार 'संविधान की आत्मा' की पुनर्वापसी का प्रयास करे। संविधान की मूल उद्देशिका को अपरिवर्तनीय घोषित किया जाए। शोध– केंद्र इसके लिए प्रतिबद्ध है। युवाओं में स्वतंत्रता की चेतना स्थायी भाव के रूप में स्थापित हो इसके लिए उच्च शिक्षा संस्थानों में संविधान स्थल बनाकर वहाँ पर भारत का मूल हस्तलिखित सचित्र

संविधान स्थापित किया जाए। प्रबंध तंत्र की उपाध्यक्ष वर्षा सिंह जी द्वारा महाविद्यालय के मुख्य प्रांगण में 'संविधान स्थल' का निर्माण करा कर उसमें भारत के 'मूल हस्तलिखित सचित्र संविधान' को स्थापित कर महान राष्ट्रीय धर्म का निर्वहन किया गया है। संविधान स्थल संबंधी शोध केंद्र के प्रस्ताव को, युवाओं के लिए उसकी महत्ता को स्वीकार कर, इस कार्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए शोध–केंद्र उपाध्यक्ष वर्षा सिंह जी एवं सचिव उमेश शाह जी का हृदय से आभार व्यक्त करता है।

अन्ततः स्वतंत्रता की उत्तर मीमांसा के प्रतिफलन के रूप में कहा जा सकता है कि हम नागरिकों को इन मूल्यों को आत्मसात करते हुए राष्ट्र धर्म का पालन करना है। 'सत्यमेव जयते' में पूर्ण विश्वास रखते हुए 'आध्यात्मिक लोकतंत्र' की ओर अग्रसर होना है। सतत संवाद से स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए अपने को मतदाता से आगे बढ़ाकर नागरिक के रूप में प्रतिष्ठित करना है। स्वतंत्रता के अमृत काल से आगे बढ़कर शताब्दी पूरी होने तक गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की 'स्वतंत्रता' के लिए की गई यह प्रार्थना चरितार्थ होकर 'नए भारत' के निर्माण में समर्थ हो :–

मन भय रहित हो,
माथा ऊंचा हो ,
और जहां विवेक की सरिता को अविवेक और अंधविश्वास के
रेगिस्तान ने सोख न लिया हो।

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज

गोण्डा (अवध)